RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 23 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 11 नवम्बर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड स्थापना की रजत जयंती

लुटने से बचाना है पहाड़ को

सोच से पहरा भला

धीरज उप्रेती

उत्तराखण्ड प्रदेश की स्थापना के 24 साल पूर्ण होने के बाद 25वें वर्ष में प्रवेश यानी रजत जयन्ती का आयोजन राज्यभर में व प्रवासियों ने धूमधाम से मनाया। सरकार की ओर से सप्ताह भर तक आयोजनों की भरमार रही। वैसे भी इस पर्वतीय राज्य बनने के बाद से आयोजनों की बाढ़ ही आ चुकी है। रजत समारोह के गैरसरकारी आयोजनों के पीछे अधिकतर अपने प्रचार की ललक दिखाई दी। राज्य स्थापना में समर्पित ताकतों के अलावा अपने को उत्तराखण्डी सिद्ध करने के लिये टोपी-पगड़ी पहनने वाले नेताओं का सक्रिय होना भी सकारात्मक देखा जाना चाहिये। क्योंकि पृथक पर्वतीय राज्य के घोर विरोधी रहे ऐसे नेता राज्य बनने के बाद से राजनीति का तड़का लगाते हुए तराई में अपने को समृद्ध कर रहे हैं।

इस बीच मूल निवासी व भू कानून को लेकर पर्वतीय समाज ने जिस प्रकार से ताकत दिखाई है वह यहाँ की जरूरत भी है। राज्य के रजत जयन्ती उत्सव पर पहाड़ की आम जनता जान चुकी है कि 'सोच से पहरा भला' जरूरी है। पृथक पर्वतीय राज्य की अवधारणा के लिये सबसे पहले पहाड़ को लुटने से बचाना होगा। पर्यटन प्रदेश के रूप में विकसित होते उत्तराखण्ड की शान्ति भंग

शेष पृष्ठ 3 पर

अपनी संस्कृति तभी बचेगी जब अपना गाँव सुरक्षित हो

महिमा उत्तराखण्ड की

केदारा की धरती पावन, माटी मानसखण्ड की,
आओ मिल-मिल गाएं हम, महिमा उत्तराखण्ड की।
आओ मिल-मिल गाएं हम, महिमा उत्तराखण्ड की।।2
देवभूमि उत्तर की ये, हिमालय की गोद में,
चम-चम, चम-चम, चम-चम चमके, भारत के किरीट में
बाँके बुग्याल फैले, परियों के प्रखण्ड की
आओ मिल-मिल गाएं हम, महिमा उत्तराखण्ड की।
केदारा की.....
भव्य दिव्य धाम धरणी, तीरथ मन्दिर गुरुद्वारा
कण-कण में शंकर के दर्शन, गिरि-गिरि में माता गौरा
मुकद्दस पीरान कलियर, साहिब हेमकुण्ड की
आओ मिल-मिल गाएं हम, महिमा उत्तराखण्ड की।
केदारा की.....
चाँदी चमके भाल पर, तन में फैली हरियाली
भावर-तराई चरणों में, उपजे अन्न खुशहाली
फूलों की घाटी भाये, भूमि सतरंग की
आओ मिल-मिल गाएं हम, महिमा उत्तराखण्ड की।
केदारा की.....
वीर भूमि भारत की यह, गाथा गरिमा की अनन्त
देश सेवा पूजा मानें, उर में राखें जय-जय हिन्द
गंगा जमुनी रंगत ओढ़े, मेधाएं प्रचण्ड की
आओ मिल-मिल गाएं हम, महिमा उत्तराखण्ड की।
केदारा की.....

-दीवान सिंह कठायत

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

शैक्षिक पुरस्कार के दावे

इन दिनों में एक समाचार सुर्खियों में है कि राज्य के सरकारी स्कूलों के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों में अपने कार्यों को सामने लाकर पुरस्कार पाने की ललक नहीं रही। राज्य के प्रतिष्ठित शैलेश मटियानी उत्कृष्टता पुरस्कार में बेसिक और माध्यमिक शिक्षकों के अन्तर से इस तथ्य को बल मिल रहा है। पिछले कुछ साल से शैक्षिकों के राज्य के सबसे बड़े पुरस्कार में माध्यमिक शिक्षकों की स्थिति काफी कमजोर है। जहाँ बेसिक स्तर पर हर जिले से लगातार एक शिक्षक का चयन हो रहा है, वहीं माध्यमिक स्तर पर पाँच से सात शिक्षक ही मिल रहे हैं।

शैलेश मटियानी पुरस्कार में हर साल 29 पुरस्कार तय हैं। हर जिले से एक बेसिक और माध्यमिक का उत्कृष्ट शिक्षक, दो डायट और संस्कृत शिक्षा से। इस बार 2024 के पुरस्कार के चयन की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इस बार के लिए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय को केवल 22 शिक्षकों के नाम के प्रस्ताव मिले हैं, इन्हें प्रेजेंटेशन के लिये बुलाया जाएगा।

अब बात पुरस्कारों की करें तो सच्चाई इस प्रकार है- जिस तरह के पुरस्कार, सम्मान दिये जाने का चलन बढ़ चुका है वह मजाक हो चुका है। सैकड़ों मंचों पर हजारों लोगों को किसी प्रकार का सम्मान दिया जा रहा है, इसके पीछे व्यावसायिक हाथ ज्यादा हैं। नेताओं, उद्योगपतियों, बड़े कारोबारियों, बिचौलियों तक को जिस प्रकार से पुरस्कार मिलने लगे हैं वह बड़ा मजाक ही कहा जाएगा। जो जिस विषय से सम्बन्धित व्यक्ति नहीं है उन्हें उस बात के लिये सम्मानित किया जाने लगा है। रामलीला मंच से लेकर नुमाइश, महोत्सव से लेकर सेमिनारों, करवाचौथ आयोजन से लेकर किसी उद्घाटन आयोजन तक में जिस प्रकार से एकसाथ उत्कृष्टता प्रमाण पत्र देकर आए दिन जश्न मनाया जा रहा है, इन पुरस्कारों की खरीद भी हो सकती है।

शिक्षकों का शैक्षिक पुरस्कार के लिये दावे न करना इस बात का भी संकेत है कि सरकार की ओर से जिस प्रकार के पुरस्कार वितरित किये जाने लगे हैं वह शायद चुभने लगे हों। देखने में आया है कि कई प्रकार के पुरस्कार सिर्फ उन शिक्षकों को मिले हैं जो अपने मूल कार्य 'पठन-पाठन' के अलावा पुरस्कार के लिये फार्म भरने, फाइल बनाने, फोटोग्राफ जुटाने, जीहजूरी में ज्यादा समय लगाते हैं। हो सकता है इनकी रुचि गीत, कविता, संचालन, विज्ञान, खेलकूद इत्यादि में हो लेकिन यह पड़ताल तो होनी ही चाहिये कि इनके कारण समाज को कितना लाभ हो रहा है। पठन-पाठन के अलावा यदि यह अतिरिक्त समय देकर यह सब समाज सुधार के लिये करते हैं तो बहुत अच्छी बात है। काम करने वाले दावे नहीं किया करते। ये स्वयं में आदर्श हैं।

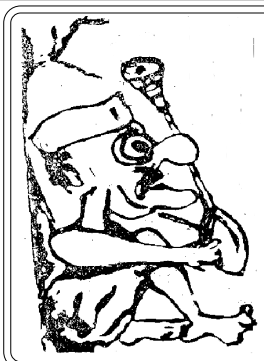

फसक

दाज्यू, दीपावली के बाद भी धमाके होने वाले ठैरे

आँख पिराने वाले पहाड़ को अशान्त कर रहे हैं बल

दाज्यू, राज्य स्थापना के बाद से हमारा चुनमुन बहुत उछाल मार रहा है। कह रहा है- 'बहुत घोषणाएं हो चुकी हैं अब दरिदर दूर हो जाएगा।' दाज्यू, वैसे भी दीपावली के दिनों से ही हमारा चुनमुन बहुत खुश था क्योंकि घनचक्कर, सीटी, राकेट, घुर्री बहुत पटाखों का धुंआ देखा। दाज्यू, क्या करें इस दुनिया में? खुशियों के लिये भी धुंआ देखना जरूरी हो गया है। जबकि धमाके का कोई समय नहीं है। दीपावली के बाद भी धमाके होने वाले ठैरे। वैसे भी अब चुनाव का समय है। बजन सिंह और चीनू छात्र संघ चुनाव को लेकर पूरा खेत जोतने के मूड में हैं। हल्द्वानी के एमबीपीजी में कर्मचारी नेता और छात्र नेताओं के बीच डिंगर-डिंगर की खूब चर्चा हो रही है। बड़ा कालेज ठैरा। बड़ी बातें बड़े करीने से निपटने वाली हुई। बबासीर का इलाज खानपान में संयमित रहकर ही होता है बल। ज्यादा मिर्च-मसाला दिक्कत देता है।

चिन्ता यह भी होने लगी है कि चारों ओर माहौल बिकराल बना हुआ है। कोटद्वार में आरटीआई एक्टिविस्ट की चप्पलों से पिटाई के बाद धुंध छाई रही। जुवा नेता बॉबी पंवार के वीडियो जारी हो चुके हैं और वह प्रदेश सुधारने की बात कह रहे हैं। दाज्यू, प्रदेश-सुरक्षा-पर्यावरण-हरित ये सब बहुत दिनों से हो रहा है लेकिन इनसे भी ज्यादा घपले दूसरे हैं। रामनगर मालधन में कार सवारों ने युवक का अपहरण कर मारपीट कर दी। अल्मोड़ा के युवक मनीष कुमार से सरकारी नौकरी दिलाने के नाम पर साढ़े आठ लाख रुपये ठग लिये बल। रुद्रपुर में युकां नेता के भतीजों पर धमकाने का आरोप लगा है। निकाय चुनाव की सुरबुराहट के बीच भूत बंगला के भाजपा कार्यकर्ता मोहसिन मियां पर कोई फोन आया बल। मियां कह रहे हैं- 'मेरी लोकप्रियता देख यूथ कांग्रेस नेता परवेज कुरैशी के भतीजे शोएब व शाहजात दो महीने से डराने ध मकाने का काम कर रह हैं।'

दाज्यू, डराने-धमकाने से एक बात और याद आई पटरी पार डिग्री कालेज में अन्यरपट्ट हो रही है। कुछ कहो तो मैडम टेसू बहा देती हैं। दाज्यू, आँख पिराने वाले पहाड़ को अशान्त कर रहे हैं बल। एनएसएस के नाम पर लबली मैडम ने प्याज कटवा दिया ठैरा। मारे मिर्च के कौन फटक सकता है आस-पास। बजट में आई राशि से 'क्रीम-पाउडरा घिसने किले नै' हो जाने वाला ठैरा। रामनगर के गुलरघट्टी इलाके में एचआईवी संक्रमित किशोरी ने 17 माह में करीब 22 युवकों को एड्स का बीमार बना दिया है बल। दो-चार दिन खूब खबर उछली अब एड्सबाजी पता नहीं कहा है, कुछ तो हो ही रहा होगा। इस पर निगरानी करनी होगी।

टिहरी के कीर्तिनगर थाना क्षेत्र से नाबालिक को भगाने वाले तीन आरोपी पुलिस ने पकड़ लिये। दाज्यू, और ही हो रही है कहा, कोई किसी की मान ही नहीं रहा। नंग्योई देख कर औतरते हैं बल। बेतालघाट ब्लाक के खैरनी के तोक बढ़ेरी में ग्रामीणों ने उनकी जमीन पर उपखनिज भण्डारण कर जमीन कब्जने का आरोप लगाया है।

दाज्यू, अपना चमन सिंह भी छट पूजा के बाद से खुश है। कह रहा था- 'इस बार पहाड़ वाली नदी के पास नहाय खवाये। बहुत बालू होत रहल। अबकी बेर जे धक्का मार गाड़ी चलवाऊं।' दाज्यू, देवभूमि में कोई खड्डे कर रहा है कोई भरने को कह रहा है। ये सब धमाके ही ठैरे।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा- रालम वालों ने मुझे नया जीवन दिया

जगमोहन रौतेला

देश के मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार को 5 दिन के दौरे पर पिथौरागढ़ जिले के सीमान्त क्षेत्र मिलम पहुँचना था। वहाँ उन्हें नन्दा देवी ट्रेकिंग के अलावा सीमान्त क्षेत्र के 14 गाँवों में मतदान की व्यवस्था को भी देखना था। उन्हें लास्पा साईं के मतदान केन्द्र नम्बर 3 का जायजा भी लेना था। 14 गाँवों के मतदान केन्द्रों में मतदान प्रतिशत की जानकारी लेने के साथ-साथ यह भी पता करना था कि मतदान के दौरान मतदाताओं के सामने क्या-क्या परेशानियां आती हैं? और उन्हें कैसे दूर किया जा सकता है। इसके लिए वह 16 अक्टूबर को अपने पीएसओ नवीन कुमार के साथ देहरादून के जॉलीग्रांट हवाई अड्डे पहुँचे। वहाँ से हेलीकाप्टर द्वारा मुनस्यारी पहुँचे। उनके साथ उत्तराखण्ड के अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी विजय कुमार जोगदण्डे भी थे।

मुनस्यारी से दोपहर लगभग 1:00 बजे राजीव कुमार का हेलीकाप्टर तहसील मुख्यालय से मिलम के लिए निकला। लगभग 50 मिनट बाद 45 किलोमीटर दूर पहुँचने पर मौसम खराब होने से हेलीकाप्टर ना तो आगे जा पाया और न ही वापस लौट सका। मजबूरन पायलट को रालम गाँव में आपात लैंडिंग करनी पड़ी। रालम गाँव मिलम से लगभग 22 किलोमीटर दूर है। देश के मुख्य निर्वाचन आयुक्त के हेलीकाप्टर की आपात लैंडिंग की सूचना मिलते ही पिथौरागढ़ जिला प्रशासन में अफरा-तफरी मच गई।

प्रशासनिक अमला मिलम में राजीव कुमार के स्वागत की तैयारी में खड़ा था। मिलम से रालम गाँव के लिए केवल पैदल मार्ग ही है। इससे मुख्य निर्वाचन आयुक्त को रेस्क्यू करना प्रशासन के लिए आसान कार्य नहीं था। शाम को रालम गाँव में अचानक तेज बारिश भी होने लगी। जिससे मौसम और ठण्डा हो गया। पूर्व प्रधान ईश्वर सिंह नबियाल ने बताया कि बारिश होने के बाद रालम गाँव में न्यूनतम तापमान 5 डिग्री तक पहुँच जाता है। सवेरे के वक्त वहाँ मौसम साफ था। पर दोपहर बाद अचानक से मौसम बिगड़ गया।

प्रशासन के लिए सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि रालम गाँव में कोई व्यक्ति मौजूद नहीं था। वहाँ के लोग कुछ दिन पहले ही शीत प्रवास के लिए निचले इलाकों के लिए निकल चुके थे। चीन सीमा के नजदीक बसे रालम गाँव में प्रतिवर्ष अप्रैल से अक्टूबर पहले हफ्ते तक लोग वहाँ ग्रीष्मकालीन प्रवास करते हैं। जिनकी संख्या लगभग 3,000 है। इस गाँव में बिजली नहीं है। पूर्व प्रधान ईश्वर सिंह नबियाल कहते हैं कि वे लोग चार्जेबल एलॉडी से अपने घरों में उजाला करते हैं। अगर लोग शीत प्रवास के लिए नहीं निकले होते तो प्रशासन के लिए ज्यादा परेशानी की बात नहीं थी। गाँव के मानव विहीन होने से प्रशासन की समझ में नहीं आ रहा था कि वह मुख्य चुनाव आयुक्त की सहायता कैसे करें?

शीत प्रवास पर नीचे लौट चुके लोगों से किसी तरह संपर्क किया गया। जिनमें से कुछ लोगों ने अपने घर की पहचान बताकर वहां रहने के लिए कहा। उसके बाद मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार ने अपने साथियों के साथ एक घर में शरण ली। वहाँ मोबाइल और दूसरे फोन का नेटवर्क भी नहीं है। निर्वाचन आयुक्त के पीएसओ नवीन कुमार के पास सेटेलाइट फोन था। उसी के द्वारा प्रशासन और आईटीबीपी के अधिकारियों से लगातार संपर्क बना हुआ था।

पिथौरागढ़ के जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी के निर्देश पर आवश्यक सामान के साथ आईटीबीपी और एसडीआरएफ की एक-एक टीम लीलम और मिलम से दोपहर 2 बजे रालम गाँव के लिए रवाना हुई। सेटेलाइट फोन के द्वारा हुए सम्पर्क से प्रशासन को यह जानकारी मिल रही थी कि वह सभी सुरक्षित हैं और जिस घर में मुख्य निर्वाचन आयुक्त और उनके साथियों ने शरण ली थी, उस घर में भोजन की कुछ व्यवस्थाएं उपलब्ध थी।

मुनस्यारी के पातों गाँव से भी तीन लोगों का एक दल पूर्व प्रधान ईश्वर सिंह नबियाल के नेतृत्व में उनकी मदद के लिए पैदल निकल पड़ा। नबियाल के साथ सुरेन्द्र कुमार और भूपेन्द्र सिंह ढकरियाल थे। पातों से रालम गाँव लगभग 30 किलोमीटर दूर है। यह दल अपने साथ बिस्किट, स्लीपिंग बैग और खाने-पीने का कुछ सामान लेकर चला। लगभग 30 किलोमीटर पैदल चलने के बाद यह दल देर रात रालम गाँव पहुंच गया और उसने मुख्य निर्वाचन आयुक्त और उनके साथियों से सम्पर्क साध लिया।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार, उनके पीएसओ नवीन कुमार और उत्तराखण्ड के उप मुख्य निर्वाचन अधिकारी विजय कुमार जोगदण्डे को 19 घण्टे बाद रेस्क्यू किया जा सका। एक रात रालम गाँव में बिताने के बाद 17 अक्टूबर को वे लोग दूसरे हेलीकाप्टर से मुनस्यारी हेलीपैड पहुँचे और वहाँ से देहरादून के लिए रवाना हुए। उनके मुनस्यारी हेलीपैड पहुँचने पर पुलिस और आईटीबीपी के जवानों ने उन्हें गार्ड ऑफ आनर दिया। जिलाधिकारी विनोद गोस्वामी ने कहा कि पुलिस- प्रशासन, आईटीबीपी और स्थानीय लोगों के सहयोग से मुख्य चुनाव आयुक्त को रेस्क्यू किया गया। रालम ग्लेशियर में ट्रेकिंग के लिए पहुँचे ट्रैक्टरों ने भी मुख्य निर्वाचन आयुक्त की मदद की। उनके पास जो भी खाने-पीने का सामान था, वही मुख्य निर्वाचन आयुक्त और उनके साथियों को भी दिया गया। उनकी मदद के लिए मिलम से आईटीबीपी के जवानों का दल 22 किलोमीटर पैदल चलकर रालम पहुँचा। जवानों को रास्ते में 3 फीट र्क के बीच ब्रिजगंगा टॉप को पार करना पड़ा।

दिल्ली पहुँचकर मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने उत्तराखण्ड के मुख्य निर्वाचन अधिकारी और आईटीबीपी के महानिदेशक को पत्र लिखकर मदद करने वाले गाँव वालों, सरकारी कर्मचारियों का आभार जताया। अपने पत्र में उन्होंने लिखा कि सभी युवा देवदूतों ने मानवता के उच्च आदर्शों का पर्याय बनते हुए हम सब के जीवन की रक्षा की। और उस दिन को मेरे लिए अविस्मरणीय बना दिया। उन्होंने सभी का दिल की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए सभी के स्वस्थ जीवन और दीर्घायु होने की कामना की।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

यादें आन्दोलन की

निहत्थे राज्य आन्दोलनकारियों पर गांधी जयन्ती के दिन बरसाई गई थी गोलियां

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

'कोदा-झंगोरा खाएंगे, उत्तराखण्ड बनाएंगे' और 'आज दो अभी दो उत्तराखण्ड राज्य दो' जैसे नारे गूंज रहे थे। पर्वतीय क्षेत्र की निरन्तर उपेक्षा, पहाड़वासियों का शोषण एवं सरकारी दमन की परिणति का निर्णय था 2 अक्टूबर, 1994 का 'दिल्ली कूच'! यह निर्णय किसी एक व्यक्ति या आन्दोलनकारी संगठन का न होकर मध्य हिमालय के इस जनमानस का था, जो स्वाधीनता के चालीस दशकों से गरीबी, बेरोजगारी, शोषण एवं अनियोजित विकास के बीच धैर्य व संयम की अग्नि परीक्षा दे रहा था। अनगिनत धरने, प्रदर्शन व बन्द के आयोजन की गूंज को अनसुना करने वाली केन्द्र सरकार को 2 अक्टूबर 1994 की गांधी जयन्ती पर मध्य हिमालय की जनभावना का अहसास करने के लिए हिमालय की चोटी से 'दिल्ली कूच' के लिए 1 अक्टूबर 94 को भारी जन सैलाब उमड़ा जो तत्कालीन शासन तंत्र की बर्बरता का शिकार होकर उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलन के इतिहास का एक रक्तरंजित काला अध्याय बना। 01 अक्टूबर 1994, को गढ़वाल मण्डल के विभिन्न जिलों से जब हजारों उत्तराखण्ड राज्य आन्दोलनकारियों ने 2 अक्टूबर 1994, की दिल्ली रैली में भाग लेने के लिए कूच किया तो उन्हें तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार ने जगह-जगह बलपूर्वक रोका गया।

देहरादून, टिहरी, पौड़ी, उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग और हरिद्वार जनपदों से सैंकड़ों वाहनों में सवार के वाहनों के काफिलों ने जब 01 अक्टूबर की रात्रि को मुजफ्फरनगर जनपद की सीमा में प्रवेश किया। शहर से करीब 4 किलोमीटर पहले तत्कालीन रामपुर तिराहे पर उत्तर प्रदेश पुलिस और पीएसी के जवानों ने इस तरह मोर्चा सम्भाला जैसे किसी शत्रु की सेना पर सशस्त्र हमला करना हो। 1 अक्टूबर की मध्य रात्रि और 2 अक्टूबर की प्रातः उत्तर प्रदेश सरकार का वरदहस्त प्राप्त मुजफ्फरनगर प्रशासन, पुलिस और पीएसी ने अपने षड्यंत्र को बखूबी अंजाम दिया। यहां भारी संख्या में थाना कोतवाली नम्र मंडी एवं सिविल लाइन मुजफ्फरनगर, मंसूरपुर, शाहपुर, जानसठ, पुरकाजी, छपार, खतौली, थानाभवन, शामली, भोपा और मेरठ जनपद की फोर्स, कई कम्पनी पी.ए.सी. के साथ पहले से ही घात लगाकर बैठी थी। रात के अन्धेरे में महिलाओं को बलपूर्वक बेआबरू किया गया। भोर का सूरज निकलने से पहले आंसू गैस, वाटर केनन, लाठी चार्ज, के बाद अंधाधुंध सीधी फायलरग की गयी। जिसमें सात बेगुनाह आन्दोलनकारियों जिससे देहरादून के राजेश लखेड़ा सत्येन्द्र चौहान, रविन्द्र रावत, गिरीश भद्री, बलवन्त सिंह तथा ऋषिकेश के सूर्य प्रकाश थपलियाल शहीद हुए। गम्भीर रूप से घायल अशोक कुमार कौशिक ने 10 नवम्बर 1994 पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में दम तोड़ा। सैकड़ों लोग बुरी तरह जख्मी हुए। बर्बरता पूर्ण कार्यवाही में इंसानियत एवं मानवता की सारी सीमाएं तोड़कर पुलिस उन लोगों को भी बेसुध होने तक यातनाएं देती रही जो पहले से ही लाठी गोली से घायल होकर इलाज के लिए तड़प रहे थे। मारामारी के बीच ही आन्दोलकारी युवक भीड़ में घुस कर पैरों के नीचे कुचले जा रहे अपने घायल साथियों को किसी तरह पीछे खींचकर डाक्टरी सहायता के लिए रुड़की की ओर भेजते रहे। रुड़की के प्राइवेट व सरकारी चिकित्सालयों से लेकर देहरादून तक जहाँ भी चिकित्सा सुविधा मिली वहीं घायलों को पहुँचाने को सिलसिला देर तक चलता रहा। मुजफ्फरनगर काण्ड में हजारों स्त्री-पुरुष घायल हुए। यह संख्या इतनी अधिक थी कि इसका अनुमान लगाना कठिन है। क्योंकि घायल आन्दोलनकारियों को सरकारी अस्पतालों में भर्ती कराए गए लोगों के अलावा उन व्यक्तियों का पता नहीं चल पाया जिन्होंने पुलिस के भय व आतंक के कारण या तो प्राइवेट अस्पतालों में इलाज कराया या बिना इलाज कराये ही घायलावस्था में ही अपने घर चले गए। ऐसे सैंकड़ों घायलों के नाम आज भी अज्ञात हैं। इस तरह पूर्व प्रधानमंत्री स्व. लाल बहादुर शास्त्री और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयन्ती पर पूरे विश्व को अहिंसा का सन्देश देने वाले भारत में लहसा का सबसे बड़ा ताण्डव हुआ। जो रामपुर तिराहा या 'मुजफ्फरनगर काण्ड' के नाम से राज्य आन्दोलन के इतिहास का काला अध्याय कहलाता है। शासन की शह पर मुजफ्फरनगर में निर्दोष आन्देलनकारियों का कत्लेआम और महिलाओं के साथ सामुहिक दुराचार की घटनाओं से उन दिनों पूरा पहाड़ मर्माहत हो उठा था। उत्तर प्रदेश के संवैधानिक ढांचे के पूरी तरह ध्वस्त होने के साथ ही उ.प्र. के मुख्यमंत्री द्वारा संविधान की रक्षा करने हेतु लिया गया संकल्प भारत की जनता को उस समय पाखण्ड दिखाई दिया जब जातिवादी मानसिकता से ग्रसित होकर पुलिस, प्रशासनिक अधिकारियों व कर्मचारियों ने जानबूझकर सत्तारूढ़ राजनीतिज्ञों की संविधान विरोधी आज्ञाओं का अनुमोदन करते हुए उत्तराखण्ड की जनता पर बर्बर अत्याचार किये। संवैधानिक मर्यादाओं व नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा कर पाने में असमर्थ प्रदेश सरकार व पुलिस तंत्र, व्यक्ति की गरिमा व राजनैतिक न्याय पाने के अधिकार को खण्डित व ध्वस्त करते हुए स्वयं इतनी बर्बरता और क्रूरता पर उतर आया था जिसकी मिशाल लोकतंत्र के इतिहास में नहीं मिलती। दिल्ली रैली में जाने वाले उत्तराखण्डियों को पश्चिमी उ.प्र. के विभिन्न जिलों में बैरियर लगाकर जिस तरह अकारण ही रोककर क्रूरता और बर्बरता के साथ उनका दमन करने की दुश्चेष्टा की गयी, वह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त था कि उ.प्र. सरकार लोकतांत्रिक मर्यादाओं को नष्ट कर चुकी है और सरकार की कार्यपालिका, राजनैतिक दुराग्रहों से पीड़ित होकर निहत्थे और शान्तिप्रिय आन्दोलनकारियों के बर्बर दम में आस्था रखने लगी थी।

मुजफ्फरनगर काण्ड घटित होने के बाद रामपुर गाँव के निवासी पं. महावीर शर्मा ने घटना स्थल पर ही आन्दोलन के शहीदों की स्मृति में शहीद स्मारक बनाने हेतु खसरा नं. 915 में 816 वर्ग गज भूमि उक्रांद को हस्तगत करायी गयी। जिस पर अक्टूबर 1995 में भव्य शहीद स्मारक बनाया गया। राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे ही नागरिक शान्ति समिति व उत्तराखण्ड जन समिति मुजफ्फरनगर ने भी एक शहीद स्मारक का निर्माण किया। ये दोनों ही स्मारक वर्ष 2004 तक उत्तराखण्ड आन्दोलन के उन शहीदों की याद ताजा करते रहे, जिन्होंने 2 अक्टूबर 1994 में रामपुर तिराहे पर पृथक राज्य के लिए अपनी शहादत दी थी। प्रतिवर्ष 2 अक्टूबर को उत्तराखण्ड के कोने-कोने से लोग यहाँ आकर राज्य आन्दोलन के शहीदों को श्रद्धांजति देते हैं। बाद में उत्तराखण्ड सरकार ने रामपुर तिराहे के उसी स्थान पर भूमि क्रय कर भव्य शहीद स्मारक का निर्माण करवाया जहाँ उक्रांद ने शहीद स्मारक बना रखा था। नव-निर्माण में सरकार ने सभी पुराने स्मारकों और धरोहरों को सरकार द्वारा निर्मित स्मारक में समाहित किया। जिसमे एक पुस्तकालय, संग्रहालय और विश्राम कक्ष बना हुआ है। वर्ष 2005 में यह स्मारक आगन्तुकों के लिए खोला गया। जब रामपुर तिराहा पर प्रशासन की शह पर आन्दोलनकारियों का बलपूर्वक दमन किया जा रहा था उस समय वहाँ मानवता के वे पुजारी भी थे जो लुटे-पिटे और घायल आन्दोलकारियों की मदद के लिए देवदूत बन कर आये। यहाँ रामपुर, सिसौना, मेघपुर तथा बागोंवाली का जनमानस भी अपने रोजमर्रा के काम छोड़कर पुलिस जुल्म के शिकार घायल और भूखे-प्यासे पहाड़वासियों की तीमारदारी में लगा रहा। ग्रामीण घायलों की मरहम-पटी और चाय-पानी व भोजन व्यवस्था करते रहे। सैकड़ों लोगों के लिए गांवों से ही भोजन बन कर आया। सिसौना गाँव के शिव मन्दिर पर शाम तक लंगर चलता रहा, जहाँ हजारों आन्दोलनकारियों ने भोजन किया। उनके योगदान को उत्तराखण्ड कभी भूल नहीं सकता।

30 साल पहले दो अक्टूबर को दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर अलग राज्य के लिए प्रदर्शन करना तय हुआ बसों में भरकर लोग दिल्ली रवाना हुए। मुजफ्फरनगर के रामपुर तिराहा पहुँचे थे कि पुलिस बर्बरता हुई जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस आग में अलग राज्य तो बना लेकिन जिस आदर्श राज्य का सपना आन्दोलन कारियों ने देखा था उस ओर अभी बहुत कुछ करना बाकी है। उस सपने के लिए आज भी लड़ रहे हैं।

ज्योतिष की बातें- 203

15 नवम्बर 2024 को अभी तक 138 दिनों से वक्री चल रहा है शनि अपनी मूल त्रिकोणराशि कुम्भ में मार्गी हो जाएगा। अतः शनि से प्राप्त शुभाशुभ फल अब सभी जातकों को स्वाभाविक रूप से प्राप्त होंगे।

16 नवम्बर 2024 को सूर्य मित्रराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा, जहाँ पर बुध से युति होगी तथा गुरु और शनि की दृष्टि भी सूर्य पर पड़ेगी। कुल मिलाकर सूर्य अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। अतः अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, सफलता, सम्मान आदि अपने कारक विषयों में कन्या, मिथुन, कुम्भ व मकर राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा। शेष राशियों के लिए सामान्य फल समझना चाहिए।

देवोत्थानी एकादशी- कार्तिक शुक्ल एकादशी उदयव्यापिनी तिथि में मंगलवार 12 नवम्बर 2024 को देवोत्थानी एकादशी का व्रत रहेगा। पारणा के दिन अर्थात् अगले दिन बुधवार को तुलसी विवाह के उत्सव के साथ ही अभी तक स्थगित चल रहे विवाह आदि संस्कार तथा गृहप्रवेश आदि शुभकार्य प्रारम्भ हो जाएंगे ।

वैकुण्ठ चतुर्दशी- कार्तिक शुक्लपक्ष चतुर्दशी अरुणोदय व्यापिनी तिथि तदनुसार गुरुवार 14 नवम्बर 2024 को वैकुण्ठ चतुर्दशी का व्रत रखा जाएगा। इसमें अर्धरात्रि में भगवान विष्णु की पूजा करने के बाद अरुणोदय काल में भगवान शिव की पूजा की जाती है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 94

युवाओं में शादी का संकट

एक समाचार कि लड़का विधायक को देखते ही गिड़गिड़ाने लगा कि मेरी शादी करा दो। एक दूसरा समाचार एक लड़का दोड़ते हुए थाने में गया और दरोगा से कहने लगा मेरी शादी कर दो। आजकल इस तरह के समाचार भी अखबार में अब आने लगे हैं। लगभग एक तिहाई युवा शादी न होने के कारण विक्षिप्तावस्था में पहुँच चुके हैं। शादी न होने का कारण यह नहीं है कि लड़के को कोई लड़की पसन्द नहीं आती बल्कि कारण यह होता है लड़के को कोई लड़की पसन्द नहीं करती क्योंकि उसके पास सब कुछ है लेकिन सरकारी नौकरी नहीं है। जिस प्रकार साड़ी के लिए मैचिंग ब्लाउज पीस मिलाया जाता है उतनी ही बारीकी से आजकल की लड़कियाँ शादी के लिए मैचिंग लड़का ढूंढ़ती हैं। इसी कारण 30-35 साल की उम्र तक लड़कियों की शादी नहीं हो पाती है। लड़कियों की प्रथम वरीयता पति नहीं बल्कि नौकरी हो गई है। इसलिए नौकरी प्राप्त कर लेने के बाद लगभग एक तिहाई लड़कियाँ शादी नहीं करती हैं उनके कारण लगभग एक तरह लड़के अविवाहित ही रह जाते हैं और जो दो तिहाई लड़कों की शादी हो पाती है उनमें भी लगभग एक तिहाई लड़कियाँ शादी के कुछ समय बाद वापस अपने मायके चली जाती हैं, नौकरी करने लगती हैं। सबसे भयंकर स्थिति तो तब उत्पन्न होती है जब उनमें से बहुत सी लड़कियाँ न तो पति के साथ रहना चाहती हैं और न ही पति को तलाक देना चाहती हैं। इस प्रकार लगभग एक तिहाई युवा शादी हो जाने के बाद भी भयंकर कष्ट में हैं। इस प्रकार भारत में पारिवारिक स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो चुकी है।

इसका कारण, मेरे विचार से, नारी सशक्तिकरण के अभियान, स्त्रियों के पक्ष में बनाए जाने वाले कानून और न्यायालय के बहुत से पक्षपातपूर्ण निर्णय हैं। अब समय आ गया है कि उसी लड़की को नौकरी दी जाय जिसकी शादी हो चुकी हो तथा पति के साथ रहती हो अन्यथा उसकी जगह उसके पति को ही नौकरी दी जाए ।

-सरल

उत्तराखण्ड स्थापना की रजत जयन्ती.....

शेष पृष्ठ 3 पर

करने के लिये भारी संख्या में लोगों का रुख इस ओर होने लगा है। यूपी से लगे शहरों में पहाड़ की संस्कृति को अभिषाप लगने लगा है और सीमान्त क्षेत्र तक भी जमीनों पर नज़र लग चुकी है। यही कारण है कि सीमान्त की घाटियों में अपनी भूमि सुरक्षित करने के लिये आवाज उठने लगी है। धारचूला व मुनस्यारी में अपनी जमीन बचाने व बाहरी लोगों को जमीन न देने का अभियान चलाया गया। क्षेत्रवासियों ने इस बात की आशंका जताई है कि किसी न किसी रूप में बाहर से आकर यहाँ हस्तक्षेप करने वाले चालाकी कर सकते हैं। कपकोट क्षेत्र में भी इसी प्रकार का सुनाई दिया और पिण्डारी क्षेत्र में किसी भी तरह के कब्जे का विरोध करने की बात कही गई। उत्तरकाशी में तो हंगामा हो गया जो सोचनीय है लेकिन इतना जरूर है कि पहाड़ की शान्ति में खिलवाड़ करने वाले सयि हैं। यही सब कारण है कि 'सोच से पहरा भला' का नारा बुलन्द हो चुका है। क्यों न हो क्योंकि जो प्रदेश अपनी स्थापना की रजत जयन्ती मना रहा हो और वहाँ जनभावनाओं के विपरीत पहाड़ विरोधी हलचलें होने लगी हैं। सरकार भी इन बातों को समझ रही है यही कारण है कि धामी सरकार कड़े निर्णय लेने का ऐलान कर रही है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

विज्ञान संकाय हो, कुंजवाल का उपवास

अल्मोड़ा। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गोविन्द सिंह कुन्जवाल ने रामसिंह धौनी राजकीय महाविद्यालय जैंती में विज्ञान संकाय हटाने के विरोध में 24 घण्टे का उपवास रखा। उन्होंने कहा कि जैंती समेत जागेश्वर विधानसभा के विकास के किलये लगातार संघर्ष जारी रखा जायेगा।

सेला वासियों ने धौली पर पुल बनाया

धारचूला। माइग्रेशन वाले सेला गाँव तक पहुँचने के लिये पक्का पुल न होने पर ग्रामीणों ने धौली नदी पर पुल बनाकर सिद्ध किया कि सीमान्तवासी हमेशा से मेहनत कर रास्ते अपने रास्ते बनाते रहे हैं। यहाँ लोहे का पुल 2013 की आपदा में बह गया था। ऐसे में बरसात में ग्रामीण बरसात में पुल बनाकर अपना कार्य चलाते हैं। उन्होंने शासन प्रशासन से पक्का पुल बनवाने की मांग की है।

जड़ी-बूटी दोहन रॉयल्टी दरें

नैनीताल। हाईकोर्ट ने उच्च हिमालयी क्षेत्रों में जड़ी-बूटी दोहन में बढ़ाई गई रॉयल्टी पर फिलहाल रोक लगाते हुए सरकार व प्रमुख वन संरक्षक को जवाब दाखिल करने के निर्देश दिये हैं। मामले की अगली सुनवाई जनवरी में होगी। बागेश्वर निवासी महिपाल सिंह की याचिका पर सुनवाई पर कोर्ट ने फैसला सुनाया।

बेरीनाग में कथित मस्जिद का विरोध

बेरीनाग। राष्ट्रीय सेवा संघ के अध्यक्ष हिमांशु जोशी के आह्वान पर कथित तौर पर अवैध रूप से बनाई गई मस्जिद के विरोध की चेतावनी मिलते ही पुलिस सतर्क हो गई और फ्लैग मार्च हुआ। क्षेत्र में कथित मस्जिद का विरोध करने वालों ने कहा कि शान्त क्षेत्र को अशान्त करने के लिये गुपचुप हो रहे इस प्रकार के निर्माणों को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।

गंगोलीहाट में मनमाने कर पर रोष

गंगोलीहाट। नगर पाकि के निवर्तमान सभासदों ने पालिका क्षेत्र के अन्तर्गत भवन कर वसूले जाने पर अधिशासी अधिकारी को ज्ञापन दिया। उन्होंने कहा कि पालिका मनचाहे तरीके से भवन कर वसूल रही है। बोर्ड के भंग होते ही इसका पालन नहीं किया जा रहा है।

प्रदेश का पहला नया शहर बसेगा

देहरादून। प्रदेश की पहली टापनशिप श्रीनगर के पास बसाई जाएगी। उत्तराखण्ड आवास एवं नगर विकास प्राधिकरण की बोर्ड बैठक में इसका प्रस्ताव पास हो चुका है। आवास मंत्री प्रेमचन्द अग्रवाल की अध्यक्षता में 19वीं बोर्ड बैठक में प्रस्ताव पेश किया कि राज्य स्तर पर आवास मांग सर्वेक्षण और टाउनशिप विकसित होगा।

पर्यटन के नाम पर खलिया टॉप को उजाड़ न करें

मुनस्यारी। हिमनगरी में पर्यटन के नाम पर जिस प्रकार का हस्तक्षेप होने लगा है वह भविष्य के लिये खतरा न हो जाए, इसको लेकर जागरुक जन आवाज उठाने लगे हैं। इसी सिलसिले में जमीन सुरक्षित रखने और बुग्यालों को बचाये रखने के साथ ही पर्यटन कारोबार के लिये अतिक्रमण न करने की अपील की जा रही है।

मल्ल जोहार विकास समिति सहित क्षेत्रवासियों का कहना है कि खलिया टॉप में जिस प्रकार से पर्यटकों के लिए बिना सोचे समझे अधिक संख्या में टैंट लगाए जा रहे हैं जो उचित नहीं है इससे वहाँ का वातावरण दूषित हो जाएगा। वन्य जीवों को भी नुकसान पहुँचेगो और वह वहाँ से पलायन करने लग जाएंगे। घूमने आने वाले इसके अलावा गन्दगी का वातावरण और नाले गाधेरों में गन्दगी वेस्टेज पेपर्स खाली बोतल रैपर्स छोड़ करके आएंगे और बीमारी फैलने का भी भाग्र रहेगा क्योंकि इसमें कहह्ल ऐसे लोग होंगे जिन्हें विभिन्न प्रकार की बीमारी हो सकती है। यह सब एक दूसरे को फैलने की सम्भावना भी रहेगी, इन लोगों का विधिवत मेडिकल चेकअप हो नहीं रहा होगा जो सभी के लिये घातक है। विशेष रूप से पानी का स्रोत खलिया टॉप से ही पूरे क्षेत्र में आपूर्ति की जाती है, पानी भी दूषित हो जाएगा और स्रोत बन्द होने का खतरा भी रहेगा। मल्ला जोहार विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने कहा है कि क्षेत्र हित को ध्यान रखते हुए कार्य करने की आवश्यकता है केवल अपने हित के लिए कार्य न करें। उन्होंने सभी से अपील की है कि सभ्य नागरिक होने के नाते से क्षेत्र के बारे में भी बातें दिमाग में रखनी चाहिए शासन प्रशासन को इस और विशेष ध्यान देना चाहिए। विशेष रूप से वन विभाग और स्थानीय लोगों को इस ओर एक होकर के कार्य करने की आवश्यकता है जिसे हमारा क्षेत्र गन्दगी का वातावरण में न बदल जाए। यदि इसमें छूट दी गई तो हमेशा के लिए पश्चाताप करना पड़ेगा। उन्होंने जिला अधिकारी, उप जिलाधिकारी, वन क्षेत्र अधिकारी, थानाध्यक्ष, तहसीलदार, जल संस्थान एवं जल निगम विभाग को भी सूचना देते हुए अपने स्तर से अग्रिम कार्रवाई करने की मांग की है।

मल्ला जोहार विकास समिति के वार्षिक अधिवेशन में सुनाई समस्याएं

मुनस्यारी। मल्ला जोहार विकास समिति के वार्षिक अधिवेशन में उच्चहिमालय के ग्रामों की समस्याओं पर चर्चा हुई। मल्ला दुम्मर में हुए वार्षिक अधिवेशन में उपजिलाधिकारी व तहसीलदार समस्याएं सुनने के लिये मौजूद थे और उन्होंने शासन के निर्देश व प्रशासन द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी दी। साथ ही कहा कि व्यवस्था बनाने में सभी लोग अपना योगदान देंगे।

मल्ला जोहार विकास समिति के वार्षिक कार्यक्रम में अतिथि के रूप में नरेन्द्र सिंह जंगपांगी, यतेन्द्र सिंह पांगती, करन जंगपांगी, डॉ. भूपेन्द्र जंगपांगी, शंकर सिंह धर्मशक्तू, केदार वृजवाल, तारा पांगती, धीरेन्द्र सिंह जंगपांगी उपस्थित थे। लोकबहादुर जंगपांगी के संचालन में हुई सभा में गोकर्ण सिंह मर्तोलिया ने समिति द्वारा किये जा रहे कार्यों का उल्लेख किया। बहादुर सिंह क्वीरियाल, धाम सिंह बुर्फाल ने माइग्रेशन ग्रामों में हो रही दिक्कतों का उल्लेख किया। श्रीमती तारा पांगती, पूजा जंगपांगी करन सिंह, प्रेम सिंह, प्रधान पंकज वृजवाल ने क्षेत्र की समस्याओं को हल करने में मिलजुल कर कार्य करने की बात कही। माइग्रेशन काल में जोहार से पहुंचे लोगों ने प्रशासन से मांग की कि प्लास्टिक व गन्दगी करने वाले सामान को रोकने के ठोस उपाय करवाए जाएं। बताया कि स्वास्थ्य विभाग की ओर से एएनएम नहीं होने से दिक्कत हो रही है। खाद्य-राशन सामग्री के वितरण को सुचारु बनाने, संचार सुविधा को बढ़ाने सहित यातायात के लिये हर वक्त सुरक्षात्मक उपाय करवाने की बात कही। यह भी बताया कि इस बार भूस्खलन होने से बहुत दिक्कत हुई है, रस्सी के सहारे किसी प्रकार आवागमन करना पड़ा।

समिति की ओर से लोकबहादुर सिंह जंगपांगी, शंकर सिंह धर्मशक्तू, गोकर्ण सिंह मर्तोलिया, राजू बृजवाल, कैलाश धर्मशक्तू ने अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू के प्रस्तावों को रखते हुए कहा कि सामरिक दृष्टि से मल्ला जोहार के सभी ग्रामों को सुविधा पहुंचाने के लिये अभी तक वह सब नहीं किया गया है जिसकी जरूरत है। ग्रामीणों की जमीन पर उनके हक-हकूक सहित जानवरों से सुरक्षा के लिये इन्तजाम किये जाएं।

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस

धामी बोले- अग्रणी राज्य बनेगा तो यशपाल बोले- अवधारणा जस की तस

हल्द्वानी/देहरादून। उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बधाई देते हुए देवभूमि के विकास का संकल्प दोहराया। मुख्यमंत्री पुष्करसिंह धामी सहित सभी ने स्थापना दिवस की बधाई दी और अपने-अपने पक्ष रखे।

राज्य स्थापना मौके पर सीएम धामी ने कहा कि 9 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आया उत्तराखण्ड अब अपनी रजत जयन्ती मना रहा है। उनकी सरकार सबका साथ सबका विकास के मूलमंत्र के साथ चल रही है। कहा कि राज्य का 24 साल का सफर जिस स्थितियों में रहा उसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का इस राज्य के प्रति विशेष लगाव और केन्द्र सरकार के सहयोग से उत्तराखण्ड तेजी से आगे बढ़ रहा है। मोदी जी ने कहा था कि 21 वीं सदी का तीसरा दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा।

राज्य स्थापना दिवस पर नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्य ने कहा कि जिस उत्तराखण्ड का सपना राज्य आन्दोलनकारियों ने देखा था वह आज तक पूरा नहीं हुआ है। सभी भी शहीदों के सपनों का उत्तराखण्ड अधूरा है। राज्य की मूल अवधारणा के प्रश्न हमारे सामने वैसे ही खड़े हैं। कहा कि प्रदेश में लगातार उत्पादकता घट रही है और खर्च बढ़ते जा रहे हैं। कर्ज में डूबते प्रदेश के लिये स्थायी समाधान ढूंढना छोड़ सरकार की असफल नीतियां बढ़ती जा रही हैं।

कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष करन माहरा ने कहा कि स्थापना दिवस हमारी खुशी है लेकिन राज्य को किस दिशा में ले जाया जा रहा है इस पर जागरूकता जरूरी है। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने स्थापना दिवस पर कहा कि शहीदों के सपनों को साकार करने तक चुप नहीं रहेंगे। यूकेडी के संरक्षण व पूर्व विधायक काशीसिंह ऐरी ने कहा कि राज्य बनने के बाद अब इसे संवारने का आन्दोलन जारी रहना चाहिये।

प्रमोशन छोड़ने पर लाभ नहीं होगा

देहरादून। पदोन्नति का परित्याग करने वाले कर्मचारियों को भविष्य में किसी महत्वपूर्ण और सम्वेदनशील पद पर तैयानी मिलना भी मुश्किल होगा। नियुक्ति अधिकारी कर्मचारी के प्रमोशन छोड़ने की वजहों की समीक्षा करने के बाद निर्णय ले सकते हैं कि उन्हें भविष्य में दायित्व दिया जाए या नहीं। मुख्य सचिव कार्मिक एवं सतर्कता विभाग ने फार्गो नियमावली का नोटिफिकेशन जारी किया।

थल की गन्दगी रामगंगा में

थल। बाजार व आसपास की गन्दगी रामगंगा नदी में जाने के मामले लगातार मिल रहे हैं। मुख्य बाजार से होकर गुजरने वाले गधेरे में टनों के हिसाब से गन्दगी नदी में बहाई जा रही है जो खतरनाक है। अपने आस-पास गन्दगी डालने वालों को टोकने का साहस भी कोई नहीं कर पा रहा है। व्यापार मण्डल बार-बार स्वच्छता की अपील करता रहा है। इस गम्भीर मामले पर सजगता जरूरी है।

परिक्रमा

संविधान की पांचवी अनुसूचि में शामिल करें उत्तराखण्ड को

हरिद्वार। पहाड़ी आर्मी संगठन के संस्थापक अध्यक्ष हरीश रावत ने प्रेस क्लब में पत्रकार वार्ता करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विरासत, जल, जंगल और जमीन को बचाने के लिये उत्तराखण्ड को संविधान की 5वीं अनुसूचि में शामिल किया जाना चाहिये। रावत ने कहा कि उत्तराखण्ड में सख्त भूकानून लागू करने के साथ इसे संविधान की 5वीं अनुसूचि में शामिल कराने के लिये पहाड़ी आर्मी संगठन लगातार अभियान चला रहा है। आगे कहा कि ब्रिटिश सरकार ने 1931 में उ.प्र. के पर्वतीय जनपदों को ट्राइब स्टेटस दिया था। जिसे बाद में हटा दिया गया और उत्तराखण्ड बनने के बाद यह दर्जा बहाल नहीं हो सका। संविधान की 5वीं अनुसूचि में शामिल होने यहां के जल जंगल और जमीन तो बचेंगी ही बल्कि यहां के युवओं को केन्द्रीय शिक्षण संस्थाओं में 7.5 प्रतिशत आरक्षण का लाभ है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आयोजनों का उत्साह

जोहार महोत्सव में रंगारंग प्रस्तुतियां

जोहार सांस्कृतिक वेलफेयर सोसाइटी का आयोजन

महिला मंगल दलों के ढुस्का प्रदर्शन ने समा बांधा। हरि स्मारक समिति ने पुरस्कार देकर उत्साहित किया

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक वेलफेयर सोसाइटी द्वारा एमबी इण्टर कालेज मैदान में तीन दिवसीय जोहार महोत्सव का रंगारंग आयोजन किया गया। अपनी संस्कृति को संरक्षित करने और भावी पीढ़ी को इस दिशा में आगे ले जाने के लिये सोसाइटी द्वारा प्रतिवर्ष इस महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इसी में इस बार भी आयोजन में शौका समुदाय से जुड़ी संस्कृति के साथ नवाचार दिखाया दिया। मंच पर स्व. कलाकार प्रहलाद मेहरा व पप्पू कार्की का स्मरण सहित अपने परिधानों में शोभा यात्रा, पर्वतीय उत्पादों के स्टाल व खानपान सम्बन्धित सर्वाधिक स्टालों सहित प्रतियोगिताएं खास थीं। इनमें मुनस्यारी यूथ वेलफेयर सोसाइटी की पहल ने पढ़ने की प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिये पुस्तकों का स्टाल लगाते हुए सबका ध्यान आकर्षित किया। स्थानीय व मेहमान कलाकारों की मुख्य मंच पर तीन दिन तक प्रस्तुतियों ने आयोजन में रंग भरे। इसके अलावा अपनी बोली भाषा पर आधारित क्विज, कविता, लेखन प्रतियोगिता हुई। पूरे आयोजन में महिलाओं की जबर्दस्त भागीदारी मंच से लेकर स्टाल तक दिखाई दी जो शुभ संकेत कहा जाएगा। इनके द्वारा अपने श्रम, संगठन व समर्पण से आयोजन को गति दी है। कार्यक्रम में संरक्षक गजेन्द्र सिंह पांगती, अध्यक्ष जोहार मिलन केन्द्र देवेन्द्रसिंह धर्मशक्तू, महासचिव गंगासिंह धर्मशक्तू, सोसाइटी के अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह पांगती, महासचिव डी.एस. पांगती, कोषाध्यक्ष धाम सिंह मर्तोलिया, सांस्कृतिक सचिव नवीन टोलिया, ध्रुव सिंह मर्तोलिया, खरक सिंह रावत, कैलाश धर्मशक्तू, प्रेम सिंह बरफाल, प्रेम सिंह जंगपांगी, भूपेश पांगती, डॉ.एन.एस.पांगती, डॉ. वाई.एस.पांगती सहित तमाम गणमान्य जन उपस्थित थे।

गर्खा महोत्सव

अस्कोट। गर्खा वासियों ने गर्खा महोत्सव के बहाने सांस्कृतिक मनोरंजन किया और स्थानीय कलाकारों, खिलाड़ियों को प्रोत्साहन की दिशा में जोड़ा। स्व. मनमोहन सिंह कन्याल स्मृति बालीबाल टूर्नामेंट में बेहतरीन खेल प्रतियोगिता देखने को मिली। बताते चलें कि गर्खा क्षेत्र कई प्रतिभाएं विभिन्न क्षेत्रों में शुरू से रही हैं।

नौलिंग महोत्सव

गंगोलीहाट। गणाई गंगोली में भव्य कलश यात्रा के साथ तृतीय श्री नौलिंग महोत्सव का आयोजन किया गया। क्षेत्र में सांस्कृतिक हलचल के लिये युवाओं ने इसे प्रतियोगिताओं के रूप में बढ़ावा दिया। अपनी स्मृद्ध संस्कृति के लिये पहचान रखने वाले गणाई के कलाकारों ने आयोजन में स्वयंस्फूर्त भागीदारी के साथ महोत्सव को भव्य बनाया इसमें विभिन्न विधाओं से जुड़े कलाकार मौजूद थे।

हरि प्रदर्शनी में दुम्मर झूम उठा

पि.हि. प्रतिनिधि

मुनस्यारी। हरि स्मारक समिति द्वारा इस बार 72वां हरि प्रदर्शनी का आयोजन बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया गया। असल में लोक के इस आकर्षक आयोजन के लिये जो लालसा व रूचि दुम्मर वासियों में है वह सबको जोड़ने वाली है। यही कारण है पूरे आयोजन में ग्रामीणों के साथ ही यत्र तत्र प्रवास करने वाले सभी लोग बड़ी संख्या में पहुंचे थे। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. हरी सिंह जंगपांगी की याद में होने वाले इस तीन दिवसीय आयोजन में परम्परागत रूप से स्वच्छता अभियान के बाद स्थानीय स्कूल के बच्चों की प्रभातफेरी हुई। दुम्मर, घोरपट्ट, खसियाबाड़ा, दरांती, दरकोट, इमला सहित आसपास के महिला मंगल दलों ने तीन दिन तक बहुत ही उत्साह के साथ परम्परागत ढुस्का प्रदर्शन किया। बिना लाग लपेट के कारण इनका प्रदर्शन मूल में बना हुआ है। इस बार मुख्य बात यह थी कि सुदूर इमला से आई महिला मंगल दल की टीम ने शौका और बारपटिया समाज की सांस्कृति झांकी को मंच पर सजीव कर दिया। दरांती से उमड़े ग्रामीणों ने शोभा यात्रा के दौरान परम्परागत वस्त्राभूषणों के अलावा भारत-तिब्बत व्यापार के समय ध्वैनियों द्वारा भाईयों के स्वागत के तरीके का सुन्दर प्रदर्शन किया। परम्परागत रूप से लगने वाले घरेलू कुटीर उद्योगों के उत्पाद की प्रर्दशनी के अलावा नरसिंह स्मृति बालीबाल प्रतियोगिता हुई। बैंक से सेवानिवृत्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी के संरक्षण में चम्मच दौड़, घुन्नीमार जैसे आयोजन हुए। परम्परागत खेलों के अलावा बच्चों की लेखन व क्विज प्रतियोतिगा हुई। आयकर आयुक्त नरेन्द्र सिंह जंगपांगी ने सभी से अपनी परम्परा को अक्षुण बनाए को कहा। हरी सिंह ज्यू की दिव्य मूर्ति को समर्पित करने वाले सेनि. बैंक अधिकारी प्रेम सिंह जंगपांगी, संरक्षक गोविन्द सिंह जंगपांगी, समिति के अध्यक्ष किशन सिंह जंगपांगी, प्रहलाद सिंह, लोकबहादुर, ललित सिंह, धाम सिंह बरफाल, जगदीश वृजवाल, हीरा सिंह, भूपेन्द्र सिंह, प्रधान पंकज वृजवाल, बहादुर सिंह कार्की, नवीन सिंह कार्की, नाथ सिंह, त्रिलोक सिंह, लक्ष्मण सिंह लछबू, रमेश सिंह जंगपांगी, हयात सिंह कार्की, बागेश्वर से मुख्य रूप से आई पूजा जंगपांगी, डॉ.मनोज सिंह जंगपांगी, डॉ.गोकर्ण जंगपांगी, नवीन जंगपांगी, प्रहलाद सिंह बरफाल, श्रीराम सिंह जंगपांगी सहित बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

हरि ज्यू तमर याद मा

फाम ऐग महै बात-बात मा
जीवन सिंहक च्योल भया
ज्यमकै तिमि गार्ख हया
बूरफू तमर जनम भूमि
मलि दुमर बनाया करम भूमि
मैस कदी भल छिया
हरि ज्यू.....
अजादी लरै मा तिमि कुदिया
जा्ग-जा्ग तिमि पुजिया
मैस कदक नौनू ढबक
बतो तमर हंछी ठुले फसक
देसक लिहैलि जियान घालिया
तिमि हया सबूत च्याल
हरि ज्यू.....
डानधारक म्याल लागि यूं छी
हरि दा-हरि दा सब कनैछी
बांसबगरमा बोलोनिया जब
अंगरेज लिगे पकरिबे तब
हौलादबन कदी दुख पाया
फिरि ले क्ये ट्यूल नी परिया
ज्वहै कनन बीसक स्याल
वहै कनन शौकाक च्याल
हरि ज्यू.....
जेल पैली थल गया
अलमार बी बरेलि पुजिया
बरेली बी लखनू तक
जीवनक आंखरि सफर तक
नै झुकिया, नै रुकिया तिमि
हरि ज्यू.....
समाजक लिजै की नी कया
अजादी लिजै मरि मिटीया
गरीबनक तिमि द्याप्त बनिया
हरि नाम छ तमर जस
काम तमर वसै-वसै
यां कदी औल, कदी जौ्ल
तमरै नाम अमर रौ्ल
हरि ज्यू तमर याद मा
फाम ऐग महै बात-बात मा.

-जगदीश बृजवाल 'दुमरियाल'

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

सम्पर्क 7351285555

नरेन्द्र सिंह रावत

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING

मो.- 9458920379, 6396098804

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise

Bus Station Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल

भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

(सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर)

गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी

मो.- 7409440813, 7500619761

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

MARTOLIA FURNITURE

A unit of Martolia Enterprises

Pilikothi, Haldwani

Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari

A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

एम.एस. जंगपांगी

वृन्दावन विहार

मल्ली बमोरी, हल्द्वानी

अर्जुन सिंह गर्ब्याल

सुख काम्पलेक्स

निकट- मुंसी पुलिया चौराहा

इन्दिरा नगर, लखनऊ

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड शासन

राज्य स्थापना दिवस

9 नवम्बर

की हार्दिक शुभकामनाएं

"माननीय प्रधानमंत्री जी ने 21वीं सदी के तीसरे दशक को उत्तराखण्ड का दशक कहा है। हम प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरुप राज्य को हर क्षेत्र में आदर्श राज्य बनाने के लिये विकल्प रहित संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।"

पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

"21वीं सदी के विकसित भारत के निर्माण के दो प्रमुख स्तंभ हैं। पहला, अपनी विरासत पर गर्व और दूसरा, विकास के लिए हर संभव प्रयास। आज उत्तराखण्ड, इन दोनों ही स्तंभों को लगातार मजबूत कर रहा है। ये दशक उत्तराखण्ड का दशक होगा।"

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

विकसित भारत - सशक्त उत्तराखण्ड

- नीति आयोग द्वारा जारी सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) रैंकिंग में उत्तराखण्ड देश में प्रथम स्थान पर
- नकल विरोधी कानून का असर, तीन साल में रिकार्ड 17,500 से अधिक सरकारी रोजगार, आगे की भर्ती प्रक्रिया गतिमान
- राज्य आन्दोलनकारियों के लिए सरकारी सेवा में 10% क्षैतिज आरक्षण
- पिछले 20 माह मे जी एस डी पी में 1.3 गुना वृद्धि, प्रति व्यक्ति आय में पिछले 2 वर्षों मे 26 प्रतिशत बढ़ोतरी
- हाऊस ऑफ हिमालयाज़ उत्तराखण्ड के महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा तैयार जैविक एवं प्राकृतिक उत्पादों को अन्तर्राष्ट्रीय बाजार उपलब्ध कराने की मजबूत पहल
- नई फिल्म नीति के तहत उत्तराखण्ड की कुमाऊँनी, गढ़वाली, जौनसारी आदि क्षेत्रीय भाषाओं की फिल्मों को कुल लागत का 50% अथवा 2 करोड़ तक सब्सिडी
- राज्य की महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 30% क्षैतिज आरक्षण
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSME) नीति के माध्यम से औद्योगिक निवेश को प्रोत्साहन
- स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिये रु. 200 करोड़ के वेंचर फण्ड की स्थापना
- भ्रष्टाचार की शिकायत हेतु 1064 एप तथा 1905 सी.एम. हेल्पलाइन
- को-ऑपरेटिव बैंको तथा सहकारी समितियों में महिलाओं के लिये 33% आरक्षण
- दीन दयाल उपाध्याय होम-स्टे योजना, राज्य में 5000 से अधिक होम-स्टे पंजीकृत
- उत्तराखण्ड राज्य के शहीद सैनिकों के आश्रितों को मिलने वाली अनुदान राशि को कई गुना बढ़ाते हुए 50 लाख तक किया गया तथा एक आश्रित को सरकारी नौकरी देने का प्रावधान

संकल्प से सिद्धि, प्रगति संग समृद्धि 25

देवभूमि रजत उत्सव
9 नवंबर 2024-25 | उत्तराखण्ड

निवेशकों की पहली पसंद बनता उत्तराखण्ड

- अच्छा व्यावसायिक वातावरण
- निवेश अनुकूल नीतियां
- अच्छी कानून व्यवस्था
- बेहतर कनेक्टिविटी

#ExploreUttarakhand
@DIPR_UK

- प्रवासी उत्तराखण्डी सम्मेलन का सफल आयोजन
- समान नागरिक संहिता जल्द होगी लागू
- उधमसिंहनगर के खुरपिया फार्म में केंद्र सरकार द्वारा स्मार्ट इंडस्ट्रियल टाऊनशिप की स्वीकृति
- हल्द्वानी में होगी खेल विश्वविद्यालय की स्थापना
- प्रदेश में 4 हजार से अधिक क्लस्टरों में जैविक कृषि
- राजकीय और सहायता प्राप्त अशासकीय विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें
- बहुप्रतीक्षित बहुउद्देशीय जमरानी, सौंग और लखवाड़ बांध परियोजनाओं पर कार्य गतिमान
- मुख्यमंत्री सौर स्वरोजगार योजना, ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ते रोजगार के अवसर, सोलर प्लांट स्थापित करने पर MSME के अंतर्गत 50% तक सब्सिडी
- रेल, रोड़, रोपवे और एयर कनेक्टिविटी का विस्तार
- उत्तराखण्ड में जबरन धर्मान्तरण पर रोक लगाने के लिए एक सख्त धर्मान्तरण विरोधी कानून लागू किया गया
- दंगा विरोधी कानूनः अब दंगाइयों पर कड़ी कारवाई करने के साथ ही दंगे में होने वाली सार्वजनिक सम्पत्ति के नुकसान की भरपाई भी दंगाइयों से ही की जाएगी
- महिलाओं को आर्थिक रुप से सशक्त बनाने हेतु लखपति दीदी योजना के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों को 5 लाख तक का ऋण बिना ब्याज के
- मुख्यमंत्री अंत्योदय निःशुल्क गैस रिफिल योजना के तहत राज्य के करीब पौने दो लाख गरीब परिवारों को साल में 3 सिलेंडर मुफ्त रिफिल किए जा रहे हैं
- उत्तराखण्ड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में विभिन्न देशों के उद्योगपतियों द्वारा 3.56 लाख करोड़ के एमओयू हस्ताक्षरित, लगभग 85 हजार करोड़ की परियोजनाओं की ग्राउंडिंग गतिमान

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in uttarakhandDIPR DIPR_UK uttarakhand DIPR

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)